एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

लाल गरम टमाटर

(*डॉ. मेघा साहू)
सहायक प्रोफेसर (संविदा), कृषि अर्थशास्त्र विभाग, बीएम कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, खंडवा
(राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्व विद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: meghasahu2810@gmail.com

टमाटर देश की प्रमुख बागवानी फसलों में से एक है। टमाटर पौधे की खाने योग्य बेरी है, जिसे आमतौर पर सोलनम लाइकोपर्सिकम टमाटर के पौधे के रूप में जाना जाता है। टमाटर मस्तिष्क, हृदय और आंत के स्वास्थ्य के लिए लाभ प्रदान करता है। यह सब्जी, जिसे एक फल भी माना जाता है, विटामिन सी, पोटेशियम और एंटीऑक्सिडेंट जैसे लाइकोपीन जैसे पोषक तत्वों का एक ठोस स्रोत है। भारत में, टमाटर की फसल पूरे वर्ष उगाई जाती है। उत्तरी मैदानी इलाकों में, फसल की खेती शरद ऋतु और वसंत के साथ-साथ गर्मियों के दौरान भी की जाती है। दक्षिण भारत में, तीन मौसम हैं: जून-जुलाई, अक्टूबर-नवंबर और जनवरी-फरवरी। देश में प्रमुख टमाटर उत्पादक राज्य आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, बिहार, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और तमिलनाडु हैं।

देश के कुल उत्पादन में इन राज्यों की हिस्सेदारी 91% है। भारत लगभग 22 मिलियन टन टमाटर का उत्पादन करता है और लगभग 20 मिलियन टन की खपत करता है। भारत के विभिन्न हिस्सों में टमाटर बड़ी मात्रा में उगते हैं लेकिन सबसे ज्यादा टमाटर आंध्र प्रदेश में पैदा होते हैं जो इसे दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बनाता है। चीन दुनिया का सबसे बड़ा टमाटर उत्पादक है। भारत अपना अधिकांश टमाटर मालदीव, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका को निर्यात करता है और दुनिया में टमाटर का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक है। भारत अपना अधिकांश टमाटर संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और इटली से आयात करता है। भारत में टमाटर की दो प्रमुख फसलें उगाई जाती हैं। टमाटर और टमाटर उत्पाद, फोलेट, विटामिन सी और पोटेशियम के समृद्ध स्रोत हैं। फाइटोन्यूट्रिएंट्स के सापेक्ष, टमाटर में सबसे प्रचुर मात्रा में कैरोटीनॉयड होते हैं। लाइकोपीन सबसे प्रमुख कैरोटीनॉयड है जिसके बाद बीटा-कैरोटीन, गामा-कैरोटीन और फाइटोइन के साथ-साथ कई छोटे कैरोटीनॉयड आते हैं।

अर्थशास्त्र में, मुद्रास्फीति (महंगाई) किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में वृद्धि है। जब सामान्य मूल्य स्तर बढ़ता है, तो मुद्रा की प्रत्येक इकाई कम सामान और सेवाएँ खरीदती है; परिणामस्वरूप, पैसे की खरीद शक्ति में कमी आ जाती है। मुद्रास्फीति (महंगाई) के विपरीत अपस्फीति है, वस्तुओं और सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में कमी। मुद्रास्फीति (महंगाई) का सामान्य माप, मुद्रास्फीति दर है, जो सामान्य मूल्य सूचकांक में वार्षिक प्रतिशत परिवर्तन को बताता है। मुद्रास्फीति के विभिन्न प्रकार हैं जैसे, मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति, लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति, आपूर्ति-पक्ष मुद्रास्फीति, खुली मुद्रास्फीति, दमित मुद्रास्फीति, अति-मुद्रास्फीति। भारत में मुद्रास्फीति को मापने के लिए दो सूचकांकों का उपयोग किया जाता है - उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) और थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई)। ये दोनों वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में परिवर्तन की गणना के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए मासिक आधार पर मुद्रास्फीति को मापते हैं। यह अध्ययन सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को बाजार में मूल्य परिवर्तन को समझने में मदद करता है और इस प्रकार मुद्रास्फीति पर नजर रखता है।

आम तौर पर देखा जाए तो महंगाई के विभिन्न कारण हो सकते हैं। मुद्रास्फीति (महंगाई) तब हो सकती है जब कच्चे माल और मजदूरी जैसी उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण कीमतें बढ़ती हैं। उत्पादों और सेवाओं की मांग में वृद्धि मुद्रास्फीति का कारण बन सकती है क्योंकि उपभोक्ता उत्पाद के लिए अधिक भुगतान करने को तैयार हैं। मुद्रास्फीति (महंगाई) अर्थव्यवस्था को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरीकों से प्रभावित करती है। नकारात्मक प्रभावों में पैसा रखने की अवसर लागत में वृद्धि, भविष्य की मुद्रास्फीति (महंगाई) पर अनिश्चितता शामिल होगी, जो निवेश और बचत को हतोत्साहित कर सकती है, और यदि मुद्रास्फीति (महंगाई) काफी तेज है, तो वस्तुओं की कमी हो जाएगी क्योंकि उपभोक्ता इस चिंता से जमा करना शुरू कर देंगे कि भविष्य में कीमतें बढ़ जाएंगी। । सकारात्मक प्रभावों में नाममात्र वेतन कठोरता के कारण बेरोजगारी को कम करना, केंद्रीय बैंक को मौद्रिक नीति को आगे बढ़ाने में अधिक स्वतंत्रता देना, धन जमा करने के बजाय ऋण और निवेश को प्रोत्साहित करना और अपस्फीति से जुड़ी अक्षमताओं से बचना शामिल है।सार्वजनिक व्यय में वृद्धि, जमाखोरी, कर में कटौती, अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में मूल्य वृद्धि मुद्रास्फीति (महंगाई) के अन्य कारण हैं। इन कारकों के कारण कीमतें बढ़ती हैं। इसके अलावा, बढ़ती माँगों के कारण कीमतें बढ़ती हैं जिससे मुद्रास्फीति (महंगाई) बढ़ती है।

वर्तमान परिवेश में महंगाई को देखा जाए तो सबसे ज्यादा सब्जियों की कीमत में परिवर्तन आया है सब्जियों की बढ़ती कीमतें भारत के आर्थिक विकास को प्रभावित कर सकती हैं सब्जियों, विशेष रूप से टमाटर की कीमतों में हालिया उछाल ने पूरे भारत को स्तब्ध कर दिया है, टमाटर की कीमत और उपलब्धता आमतौर पर मौसमी पैटर्न से तय होती है, जुलाई का महीना आमतौर पर वर्ष के अन्य समय की तुलना में अधिक महंगा होता है क्योंकि यह समय फसल कटाई के बीच होता है। आरबीआई बुलेटिन में टमाटर की कीमतों पर लेख में कहा गया है कि प्रमुख उत्पादन बेल्टों में खराब मौसम और कीटों के हमलों के कारण फसल की क्षति के कारण टमाटर की कीमतों में बढ़ोतरी ने ध्यान आकर्षित किया है क्योंकि इससे भारतीय घरों के बजट पर असर पड़ा है। टमाटर की

कीमतों में अचानक और भारी वृद्धि ने देश भर के लाखों परिवारों पर दबाव डाला है, जिससे उन्हें इसकी खपत कम करने या विकल्प खोजने के लिए मजबूर होना पड़ा है।"टमाटर की ऊंची कीमतों का सीधा कारण अर्थशास्त्र का आपूर्ति-और-मांग सिद्धांत है।

टमाटर की कमी, बाजार में आपूर्ति और मांग में असंतुलन का परिणाम है। उच्च तापमान, गर्मी की लहरें और हाइड्रिक तनाव विभिन्न फलों और सब्जियों की फसल में बाधा डाल रहे हैं, और संसाधनों के अनुकूलन के कारण कम टमाटर लगाए जा रहे हैं या अंततः अन्य अधिक लाभदायक फसलों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा है। टमाटर की अत्यधिक कीमत का कारण, पर्यावरण, लॉजिस्टिक और बाजार कारकों का संयोजन है। वहीं टमाटर की महंगाई के चलते उपभोक्ता दाम कम होने का इंतजार कर रहे हैं। हालाँकि, कई कारक टमाटर की कीमतों को प्रभावित करते हैं।

टमाटर की कीमतें देश के विभिन्न क्षेत्रों में आपूर्ति और मांग की स्थिति के आधार पर मौसमी उतार-चढ़ाव के अधीन हैं। हालाँकि, हाल के दिनों में, टमाटर की कीमतों में अत्यधिक अस्थिरता देखी गई है, कुछ बाजारों में टमाटर की कीमतें ₹250 प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई हैं। मौजूदा ऊंची कीमतों का कारण अप्रैल-मई में अचानक गिरावट से पता लगाया जा सकता है, जिसके कारण कई उत्पादकों को अपनी फसलें छोड़नी पड़ीं। मार्च और अप्रैल की असामान्य गर्मी में कीटों के हमले भी देखे गए जिससे उत्पादन पर असर पड़ा।

चूंकि देश के विभिन्न हिस्सों में टमाटर की कीमतें ₹100 और ₹200 के बीच हैं, भारतीय रिज़र्व बैंक के नवीनतम मासिक बुलेटिन ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि टमाटर की कीमतों की अस्थिरता ने ऐतिहासिक रूप से देश में समग्र मुद्रास्फीति के स्तर में योगदान दिया है। देश के कुछ हिस्सों में लगातार बारिश और अपर्याप्त बारिश के कारण आने वाले हफ्तों में टमाटर की कीमतें और बढ़ने की उम्मीद है और आने वाले हफ्तों में यह ₹300 प्रति किलोग्राम तक पहुंच सकती है। इस स्थिति ने रसोई की इस आवश्यक वस्तु के उत्पादन और परिवहन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। कीमतें स्थिर होने में कुछ महीने लगेंगे। जुलाई-अगस्त और अक्टूबर-नवंबर के महीनों में आमतौर पर टमाटर का उत्पादन कम होता है, जो मौजूदा कमी में योगदान देता है।